बड़ा सच... एक नहीं हैं आत्मा और परमात्मा

आत्मा और परमात्मा को एक समझना मानव की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा से हमारा वही संबंध है जो एक पिता-पुत्र का होता है। परमात्मा शिव तो हम आत्माओं के पिता हैं। हम उनकी संतान हैं। फिर आत्मा-परमात्मा एक कैसे हो सकते हैं? परमात्मा परमधाम के निवासी हैं। हम सब आत्माएं भी परमधाम की निवासी हैं। वे अजन्मा, अकर्ता, अभोक्ता हैं जबकि मनुष्यात्माओं का जन्म होता है। वह शरीर के माध्यम से जो कर्म करती हैं उसका फल भी भोगती हैं। परमात्मा सर्व गुणों, शक्तियों, ज्ञान, प्रेम, पवित्रता के सागर हैं तो हम आत्माएं उसका स्वरूप हैं। परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं। आत्माओं का स्वरूप भी ज्योतिर्बिन्दु है। वह तीनों लोको के रचनाकार, परमशक्ति हैं।

नई सतयुगी सृष्टि की स्थापना के लिए साधारण मनुष्य तन का लेते हैं आधार

कहा जाता है बिन पग चले सुनै बिन काना, कर्म करहूँ , केहि विधि नाना।

चूंकि परमात्मा पिता का अपना शरीर नहीं होता। वह तो ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप, अजन्मा, अकर्ता हैं। इसलिए इस दिव्य कार्य के लिए साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर परकाया प्रवेश करते हैं और उन्हें नाम देते हैं प्रजापिता ब्रह्मा। परमात्मा शिव पहले ब्रह्मा को पुरानी दुनिया के विनाश और नई दुनिया की स्थापना का साक्षात्कार कराते हैं।

सन् 1937 में हीरे-जवाहरात के व्यापारी दादा लेखराज के तन को परमात्मा ने अपने अवतरण का आधार बनाया। हैदराबाद सिंध (अभी पाकिस्तान में है) में इस मिलन का एक छोटे स्तर से प्रारम्भ हुआ। क्योंकि तब परमात्मा को एक ऐसे सशक्त संगठन की जरूरत थी जिससे लोगों को यह एहसास हो सके यह कोई साधारण नहीं बल्कि परमात्मा की शिव शक्ति सेना है। चूंकि परमात्मा को भारत और वन्दे मातरम् की गाथा को भी चरितार्थ करना था, इसलिए माताओं-बहनों के सिर पर ज्ञान का कलश रखा और उन्हें इस महाभियान में अग्रणी बनाया।

परमात्मा तो जानी जाननहार है, इसलिए उन्होंने ब्रह्मा वत्सों की भविष्य की स्थिति को शक्तिशाली और परमात्मा के अवतरण को पुख्ता करते हुए 14 वर्ष तक घोर तपस्या कराई। संस्था के प्रारंभ में जुड़ने वाली अधिकतर माताएं- बहनें और कुछ भाई 14 वर्ष तक घर से बाहर नहीं निकले और तपस्या करके स्वयं को इतना शक्तिशाली बना लिया कि आज उनके तप व त्याग की शक्ति दूसरों को भी अध्यात्म और परमात्म मिलन के पथ पर अग्रसर कर रही है।

परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप हैं

हमारे धर्मग्रंथों और शास्त्रों में उल्लेख है कि परमात्मा की प्राप्ति के लिए ऋषि-मुनियों ने भी तप-साधना की। यहां सवाल ये है कि यदि आत्मा-परमात्मा एक होते तो उन्हें साधना करने की क्या जरूरत थी?

परमात्मा की पहचान के पांच आधार

जो सर्वमान्य हो अर्थात् सभी धर्मों में स्वीकार्य हो...

परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वमान्य हो, यानी जिसे सभी धर्मों की आत्माएं स्वीकार करें, क्योंकि वह सर्व धर्मों की आत्माओं का परमपिता है। उसे अलग-अलग भाषाओं और धर्मों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे कि परमेश्वर, ईश्वर, ओंकार, अल्लाह, खुदा, गॉड, नूर इत्यादि परंतु वह है तो एक ही।

जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ और परम हो...

परमात्मा उसे कहा जाएगा जो सर्वोच्च, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम या परम हो यानी उसके ऊपर कोई हस्ती न हो। परमात्मा का कोई माता-पिता, शिक्षक, गुरु या रक्षक नहीं है, बल्कि वे ही सर्व आत्माओं के परमपिता, परम शिक्षक, परम सतगुरु और परम रक्षक हैं। इसलिए उसकी महिमा में गाया जाता है - ऊंचा तेरा नाम, ऊंचा तेरा धाम, ऊंचा तेरा हर काम, ऊंचे से ऊंचा भगवान। तो जिसका नाम, धाम, गुण और कर्तव्य सबसे ऊंचा है वही परमात्मा है।

जो सबसे न्यारा और कर्म फल, पाप-पुण्य से मुक्त हो...

परमात्मा उसे कहेंगे जो सबसे न्यारा हो। परमात्मा जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण्य, सुख-दुःख के चक्करों में नहीं आते हैं। परमात्मा इस प्रकृति की परिवर्तन-क्रिया अर्थात् सतो-रजो-तमो से भी न्यारा है। वह सर्व प्राकृतिक बंधनों से मुक्त है। इसलिए वह सर्व से न्यारा और सर्व का प्यारा माना गया है। ईश्वर से ऊंचा तो कोई नहीं है परंतु उसके समान भी कोई नहीं है।

जो सर्वज्ञ हो अर्थात् सबकुछ जानता हो...

परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्वज्ञ हो अर्थात् वह सबकुछ जानता हो। किसी भी संदर्भ में जब कोई बात व्यक्ति की समझ में नहीं आती है तो ईश्वर को याद कर अवश्य कहेगा, भगवान जाने या अल्लाह जाने अर्थात् परमात्मा से कोई भी बात अनभिज्ञ नहीं है क्योंकि वह सर्वज्ञ है।

जो सर्व गुणों और शक्तियों का भंडार हो...

परमात्मा उसे कहेंगे जो सर्व गुणों और शक्तियों का भण्डार हो। परमात्मा कभी भी किसी से लेता नहीं है, परंतु सागर या सूर्य के समान अपने गुणों और शक्तियों को देता ही रहता है। उसी के लिए गाया गया है, देने वाला जब भी देता है तो छप्पर फाड़ कर देता है।

सार... हम किसी भी साकार देहधारी व्यक्ति को परमात्मा नहीं कह सकते हैं, क्योंकि साकार व्यक्ति कभी भी सर्वमान्य नहीं हो सकता जो सभी धर्मों की आत्माओं को स्वीकृत हो। साकार देहधारी के माता-पिता, शिक्षक, गुरु, रक्षक अवश्य ही होते हैं इसलिए उसे सर्वोच्च भी नहीं कह सकते हैं। साकार व्यक्ति सबसे न्यारा भी नहीं हो सकता है क्योंकि साकार के साथ जन्म-मरण, कर्म-फल, पाप-पुण्य और सुख-दुःख आदि भी संलग्न हैं। साकार सर्व का ज्ञाता तथा दाता भी नहीं बन सकता है। वह तो और ही ईश्वर से ज्ञान, सुख, शांति और शक्ति मांगता ही रहता है। इन सभी बातों से सिद्ध होता है कि कोई भी साकारी देहधारी व्यक्ति परमात्मा नहीं हो सकता है।

देवों के भी देव का हो रहा आगमन

एक ही संस्था है ब्रह्माकुमारीज। ऐसी पूरे विश्व में कोई संस्था नहीं है जो ईश्वर से जोड़ने की सीधी विधि बता रही हो। माउंट आबू में आने पर संसार में रहने वाला प्रत्येक प्राणी ईश्वर के सम्मुख होता है। **जन्मजेय शरण महाराज,** अध्यक्ष श्री राम जन्मभूमि निर्माण न्यास, अयोध्या

परमात्मा तो जानी जाननहार है

ब्रह्मा बाबा के साथ साकार में रहने का सौभाग्य मिला। मैंने अपने जीवन में ईश्वरीय शक्ति को महसूस किया है। परमात्मा आ चुके हैं, यह सत्य है। जिस तरह मेरे जीवन में एक अप्रत्याशित बदलाव आया। स्थापना का कार्य करा रहे हैं।

ब्रह्माकुमार बृजमोहन, प्रधान संपादक, प्यूरिटी मैगजीन, दिल्ली

मन से होता है परमात्मा का मिलन

रूहानी प्यार केवल भगवान से ही मिलता है। इसकी तुलना में हर सांसारिक चीज छोटी लगती है। जब से शिव बाबा से साकार में मिलन हुआ है ये परिवर्तन इतना सहज हो रहा है जैसे रात के बाद सवेरा होता है। परमात्मा ने हमें हीरा बना दिया। - **कविता मिश्रा,** मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, आगरा

परमात्मा से मिलन अनोखा

पहली दफा परमात्मा से मिलन मनाने का अनुभव दादी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से हुआ। ये मिलन अनोखा था। मैं भगवान से मिला, तब मुझे भगवान ने वरदान दिया। इस मिलन से आंतरिक सुख की अनुभूति हुई। मेरा मन अब भी बार-बार उस अनुभव में खो जाता है। **अरूण शर्मा,** पूर्व सांसद, असम

परमात्मा ने स्वयं दिया था अपना परिचय

दादा लेखराज एक दिन वाराणसी में अपने मित्र के यहां गए थे कि उन्हें रात्रि के समय अचानक इस दुनिया के भयंकर महाविनाश का साक्षात्कार होने लगा। ऐसे विनाशक हथियारों का साक्षात्कार हुआ जो उस समय इसकी परिकल्पना तक नहीं थी। फिर इसके बाद नई दुनिया की स्थापना के लिए आसमान से उतरते देवी देवताओं का भी साक्षात्कार हुआ। दादा लेखराज को यह बात समझ नहीं आयी। फिर जब वे अपने घर पहुंचे और एक दिन अपने कमरे में बैठे थे तब उनके अन्दर निराकार परमपिता परमात्मा ने प्रवेश कर साक्षात्कार कराया तथा स्वयं परमात्मा ने अपना परिचय दिया कि-

निजानन्द स्वरूपं शिवोहम्, शिवोहम्। आनन्द स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्। प्रकाश स्वरूपम शिवोहम् शिवोहम्।

इस परिचय के साथ स्वयं परमपिता परमात्मा ने यह आदेश दिया कि अब तुम्हें एक नई दुनिया बनानी है। यही से शुरू हुआ परमपिता परमात्मा के दुनिया बदलाव का गुप्त कार्य जो आज तक अनवरत चल रहा है।

1950 में माउण्ट आबू में स्थानांतरण

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार यह संस्था राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू में स्थानांतरण हुआ। यहां एक छोटे से रूप में संस्था के सेवा कार्यों की शुरुआत हुई। माउण्ट आबू से ही पूरी दुनिया में ईश्वरीय निर्देशन में अध्यात्म और परमात्मा के अवतरण के आने की सूचना और विश्व परिवर्तन के कार्य का शंखनाद हुआ। संस्था का मुख्यालय माउण्ट आबू में ही है। 75 वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई संस्था आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष का रूप ले चुकी है। संस्था के पूरे विश्व के 137 मुल्कों में करीब नौ हजार से भी ज्यादा सेवाकेन्द्र हैं। इनके माध्यम से मनुष्यात्माओं को परमात्मा के आने की सूचना और उनसे शक्ति लेकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने की सेवा अनवरत जारी है। आज पूरे विश्व में संस्था के दस लाख से अधिक नियमित विद्यार्थी हैं। जो नियमित परमात्मा के महावाक्यों का श्रवण और राजयोग के माध्यम से परमात्मा से सीधा संवाद करते हैं।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता-

प्रकाशक एवं मुद्रक: ब्र.कु. करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग के लिए प्रकाशित एवं डीबी सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित। **सलाहकार संपादक:** प्रो. कमल दीक्षित **संपादक:** ब्र.कु. कोमल, **संयुक्त संपादक:** ब्र.कु. पुष्पेन्द्र।
RNI NO. - RJHIN/2013/53539, Postal Regd. - RJ/SRO/9662/2015-2017, Posting on 18 & 20 of Every Month only at shantivan Sub-Post Office, Abu Road, Raj - 307510

पत्र व्यवहार का पता...
संपादक: ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया एवं पब्लिक रिलेशन ऑफिस शांतिवन, तलहटी, आबू रोड- 307510, जिला-सिरोही, राजस्थान
मो. 9414172596,9413384884, 8769830661
ईमेल: shivamantram@bkivv.org